# लोक-सभा वाद-विवाद
# का
# संक्षिप्त अनूदित संस्करण

# SUMMARISED TRANSLATED VERSION

# OF
# LOK SABHA DEBATES

[ चौथा सत्र
Fourth Session ]

5th Lok Sabha

Preservation Unit
Fumigated On
Parliament Library

[ खंड 14 में अंक 31 से 40 तक हैं
Vol. XIV Contains Nos. 31 to 40 ]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK-SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : दो रुपये

*Price : Two Rupees*

## विषय-सूची/CONTENTS

**अंक 39, सोमवार, 8 मई, 1972/18 वैशाख, 1894 (शक)**

*No. 39, Monday, May 8, 1972/Vaisakha 18, 1894 (Saka)*


| विषय | SUBJECT | पृष्ठ/PAGES |
|---|---|---|
| निधन संबंधी उल्लेख | OBITUARY REFERENCE | 1—4 |
| डी० संजीवैया की मृत्यु | Death of Shri D. Sanjivayya | |
| अध्यक्ष महोदय | Mr. Speaker | |
| श्रीमती इन्दिरा गांधी | Shrimati Indira Gandhi | |
| श्री एस० पी० भट्टाचार्य | Shri S. P. Bhattacharyya | |
| श्री इन्द्रजीत गुप्त | Shri Indrajit Gupta | |
| श्री के० मनोहरन् | Shri K. Manoharan | |
| श्री श्याम नंदन मिश्र | Shri Shyam Nandan Mishra | |
| श्री आर० वी० बड़े | Shri R. V. Bade | |
| श्री मधु दडावते | Shri Madhu Dandavate | |
| श्री त्रिदिब चौधरी | Shri Tridib Choudhuri | |
| श्री इब्राहीम सुलेमान सेट | Shri Ebrahim Sulaiman Sait | |
| श्री पी० वेंकटासुब्बया | Shri P. Venkatasubbaiah | |

# लोक-सभा
# LOK SABHA

**सोमवार, 8 मई, 1972/18 वैशाख, 1894 (शक)**

*Monday, May 8, 1972/Vaisakha 18, 1894 (Saka)*

---

**लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई**

*The Lok Sabha met at Eleven of the Clock*

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
**Mr. SPEAKER** *in the Chair*]

## निधन संबंधी उल्लेख
## OBITUARY REFERENCE

### श्री डी० संजीवैया का निधन

**अध्यक्ष महोदय :** मुझे सभा को श्री डी० संजीवैया के दुखद और आकस्मिक निधन की सूचना देनी है जिनका 51 वर्ष की अल्पायु में गत रात्रि में नई दिल्ली में स्वर्गवास हो गया ।

श्री संजीवैया 1950 से 1952 तक अस्थायी संसद के सदस्य होने के समय से ही निष्ठावान जनसेवक रहे हैं । वह 1952 में मद्रास विधान सभा और बाद में 1952 से 1964 तक आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे । वह 1952 से 1960 तक पहले मद्रास सरकार के और बाद में आंध्र प्रदेश में मंत्री रह चुके थे । वह आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बने और 1962 तक यह पद संभाला । जून, 1962 में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने और जनवरी, 1964 तक रहे । वह कांग्रेस के पहले हरिजन अध्यक्ष थे । वह 1964 से 1970 तक राज्य सभा के सदस्य रहे । वह 1964–66 में केन्द्रीय श्रम और रोजगार मंत्री रहे और बाद में 1966–67 और 1970–71 में उद्योग मंत्री भी रहे । गत वर्ष से वह पुनः कांग्रेस अध्यक्ष थे । वह देशभक्त थे और अपने लोगों में उन्हें बड़ा विश्वास था । वह बहुत भले और बहुत अल्पभाषी व्यक्ति थे और अपने गुणों के कारण बहुत लोकप्रिय थे । उनके निधन से देश एक बड़े जननायक और गरीबों तथा दलितों के साथ से वंचित हो गया है ।

हम अपने इस मित्र के निधन पर गहरी संवेदना प्रकट करते हैं और मेरा विश्वास है कि सभा संतप्त परिवार विशेष कर उनकी वृद्धा माताजी के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करेंगी ।

**प्रधान मंत्री, परमाणु उर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिकी मंत्री, गृह मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) :** यद्यपि मृत्यु अवश्यंभावी है फिर भी जब काल आता है तो हमें आघात पहुंचता है। आधी रात को जब हमारे दल के नेता और साथी की मृत्यु का समाचार हमें मिला तो हम स्तब्ध रह गए। यद्यपि वह रोग से काफी पीड़ित थे परन्तु काफी समय बाद वह स्वस्थ महसूस करते थे और दिखाई देते थे। उनका निधन भाग्य की विड़म्बना है। अभी तो उन्हें कई कार्य पूरे करने थे।

लम्बे समय से शोषित जाति में जन्म लेकर राजनीतिक जीवन के शिखर तक पहुंचना उनकी योग्यता का ही प्रमाण है और साथ ही भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तन का भी एक प्रमाण है।

जैसा आपने बताया, वह जीवन के चौथे दशक में ही आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बन गए थे। उनका व्यक्तित्व सम्मानसूचक था, और वह बहुत ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे जो मानसिक रूप से आधुनिक थे और ऐसे भविष्य की कल्पना करते थे जिसमें कोई भी समुदाय या व्यक्ति वंचित अनुभव नहीं करेगा। वह अपनी धुन के बहुत पक्के थे। वह बहुत ओजस्वी वक्ता थे।

श्री संजीवैया के निधन पर गहरा शोक छा गया है और उनका निधन देश और हमारे दल के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

मैं आप से अनुरोध करती हूं कि हमारी हार्दिक संवेदनाए संतप्त परिवार विशेष कर उनकी वृद्धा माताजी और उनकी युवा पत्नी को पहुंचा दें।

**श्री एस० पी० भट्टाचार्य** (उलुबेड़िया) : मैं, अपने दल की ओर से श्री संजीवैया के असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं। यद्यपि मैं व्यक्तिगत रूप से उन्हें नहीं जानता था, फिर भी मैं कह सकता हूं कि वह बहुत महान थे और उनके निधन से देश और कांग्रेस दल ने एक महान् नेता को खोया है।

मेरा निवेदन है कि हमारी संवेदना संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जाएं।

**श्री इन्द्रजीत गुप्त** (आलीपुर) : अध्यक्ष महोदय, श्री संजीवैया के आकस्मिक निधन से हम सभी को बहुत आघात पहुंचा है। उनका प्रथम हरिजन मुख्य मंत्री और कांग्रेस दल का प्रथम हरिजन अध्यक्ष होना ही देश के राजनीतिक इतिहास में उनके नाम को अमर बना देगा।

इतने दीन और दरिद्र परिवार के विरले ही सदस्य वहां तक पहुंच पाते हैं जहां श्री संजीवैया पहुंचे। मेरा उनसे निकट संपर्क उनके श्रम-मंत्री बनने के बाद बना और उनमें दीन-दुखियों के लिए सहानुभूति मुझे स्पष्ट दिखाई दी।

महोदय, मैं अपने दल की ओर से उनके संतप्त परिवार को और कांग्रेस के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक संवेदना भेजता हूं।

**श्री के० मनोहरन्** (मद्रास—उत्तर): मैं अपने दल की ओर से सभा के नेता और प्रधान मंत्री महोदय द्वारा प्रकट उदगारों से अपने को सम्बद्ध करता हूं।

श्री संजीवैया के निधन से हमें गहरा शोक हुआ है। मैं उन्हें गत दस वर्ष से जानता था। वह पक्के ईमानदार, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे और सादगी की प्रतिमा थे। वह देश की एकता के लिए कृत-संकल्प थे और समाजवाद चाहते थे।

श्री संजीवैया के निधन का हमें गहरा शोक है और मेरा आप से निवेदन है कि मेरी पार्टी की ओर से संतप्त परिवार को हमारी गहरी संवेदना पहुंचा दें।

**Shri Shyam Nandan Mishra** (Begusarai) : It is very difficult to provide words for the sentiments for a departed soul with whom you are connected for a live time. I had known Shri Sanjivayya for the past 22-23 years.

His demise is an irreparable loss to our politics. With his death, we feel as if a member of our family has passed away.

He was attached to music and therefore his life was very harmonious. This light has extinguished when we expected maximum from it. It is said that he was the greatest public orator in Telegu after Shri T. Prakasam. I have heard him in English and I feel that he was a good orater in English also.

I feel that his death shall be widely mourned.

I request you to kindly convey my condolences as well as those of my Party to the bereaved family.

**Shri R. V. Bade** (Khargon) : Sir, Shri Sanjivayya's demise is not only a loss to his Party, but to the entire nation. He was a great Patriot and he met everyone with a smiling face.

Sir, I associate myself with the sentiments expressed by you and the Hon. Prime Minister and I associate myself on behalf of my Party in our expression of grief and in our heartfelt condolences to the bereaved family.

**श्री मधु दण्डावते** (राजापुर) : श्री संजीवैया उस समय हम स विदा हुए हैं जबकि राष्ट्र असमानता और आर्थिक पिछड़ापन समाप्त करने के लिए हम प्रयत्नशील है। उनकी लोकप्रियता का यही प्रमाण है कि उनकी मृत्यु से आज हम सबको गहरा शोक है।

मैं समाजवादी दल को उन्हें दी गई श्रद्धांजलि में सम्मिलित करता हूं और निवेदन करता हूं कि संतप्त परिवार को अपनी संवेदना आप पहुंचा दें।

**श्री त्रिदिब चौधरी** (बरहामपुर) : हमें कलकत्ता से आज वापसी पर श्री संजीवैया के निधन का शोक समाचार मिला। जो भी उनके सम्पर्क में आया उनकी मृदु स्वभाव, मित्रतापूर्ण सौहार्द और सत्यनिष्ठा से प्रभावित हुए विना न रहा। मैं भी अपने को यहां व्यक्त संवेदना और शोक में शामिल करता हूं।

मैं आपके द्वारा संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूं।

**श्री इब्राहीम सुलेमान सेट** (कोज़ी कोड) : मैं, आपके द्वारा, प्रधान मंत्री द्वारा और अपने अन्य साथियों द्वारा व्यक्त उद्‌गारों से अपने को और अपनी पार्टी को शामिल करता हूं और समझता हूं कि उनके निधन से देश ने एक महान् संसदविद्, प्रशासक और महान् व्यक्तित्व खो दिया है।

मैं, आपके द्वारा संतप्त परिवार को गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता हूं।

**श्री पी० वेंकटासुब्बया** (नंदयाल) : हमारे प्रधान मंत्री तथा अन्य दलों के नेताओं ने श्री संजीवैया को जो श्रद्धांजलि अर्पित की है उससे स्पष्ट है कि उनका व्यक्तित्व कितना महान् था। उनके निधन से देश को एक महान् पुत्र, हमारे दल को कुशल सेनापति और दलितों को अपने कल्याणकर्ता से वंचित होना पड़ा है। वह तेलुगु में बड़े ओजस्वी वक्ता थे और इतने लोकप्रिय थे कि जहां भी वह जाते थे हजारों लोग उनसे मिलने के लिए उमड़ पड़ते थे।

महोदय, मैं सभा में व्यक्त भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं और आप से अनुरोध करता हूं कि संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनाएं पहुंचा दी जाएं।

**अध्यक्ष महोदय** : उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए सभा एक मिनट के लिए मौन खड़ी रहे।

**इसके पश्चात् सदस्यगण कुछ समय तक मौन खड़े रहे।**

**The Members, then, stood in silence for a short while.**

**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्यों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर देने और शोक-सभा में भाग लेने के लिए यह सभा अब कल 11 बजे म० पू० तक के लिए स्थगित होती है।

**इसके पश्चात् लोक-सभा मंगलवार, 9 मई, 1972/19 वैशाख, 1894 (शक) के 11 बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई।**

**The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, the 9th May, 1972/Vaisakha 19, 1894 (Saka)**



(Raja) Ram Kumar Press, Lko. 27-7-72/490.